मधू और सेल्समैन

Author: Unknown

मधू: (फ़ोन पर अपने पति से बात करते हुए) क्या, तुम्हें कुछ दिन और देश के बाहर रहना पड़ेगा?

रवी: हाँ यार, रहना तो पड़ेगा, काम ही इतना ज़रूरी है। दो महीने और लग जायेंगे।

मधू: क्या दो महीने और! प्लीज़ यार, मैं तो अकेले बिलकुल बोर हो चुकी हूँ।

रवी: और मेरा हाल तो तुम पूछो मत। रात को नींद भी नहीं आती तुम्हारे बिना।

मधू: रात को नींद तो मुझे भी नहीं आती आज कल।

रवी: हाँ सिर्फ़ तुम्हारे बारे मे सोचता रहता हूँ और प्लान बनाता रहता हूँ की घर आने पर तुम्हारे साथ क्या–क्या करूँगा।

मधू: अच्छा तो बताओ क्या–क्या करोगे?

रवी: वो तो सरपराईज़ ही रहने दो अभी। फिलहाल तो मैं मुठ मार के ही काम चला रहा हूँ।

मधू: चल झूठे। तुमने कोई लडकी फँसा ली होगी अब तक।

रवी: अभी तक तो नहीं मगर वो जो मेरा दोस्त मनोज रहता है ना यहाँ? उसकी बीवी सीमा मेरे को लाईन देती रहेती है।

मधू: अरे वाह तो तुम्हारी तो ऐश है। तो तुम भी लाईन दो ना।

रवी: तुम्हे बुरा नहीं लगेगा?

मधू: नहीं इतने दिन हो गये हैं, मैं समझती हूँ की तुमसे नहीं रहा जा रहा होगा।

रवी: और तुम? तुम कैसे शांत करती हो अपने आप को?

मधू: हा। हा।। हा मैं भी अपनी अँगुली या बैंगन, खीरा इत्यादी से अपनी चूत के साथ थोड़ा खेल लेती हूँ रात को सोने से पहेले।

रवी: तो तुम भी कोई ढूँढो ना अपने टाइम पास के लिये।

मधू: तुम्हें अच्छा लगेगा?

रवी: हाँ मुझे सीमा के साथ चुदाई करने मे और भी मज़ा आयेगा जब मैं सोचूँगा की तुम भी वहाँ किसी स्टड के साथ मजे ले रही हो।

मधू: ठीक है, तो मैं भी ढूँढती हूँ कोई।

रवी: हाँ फिर हम दोनों फोन पर एक दूसरे को अपना अपना एक्सपीरियंस बतायेंगे। बहुत मज़ा आयेगा।

मधू: इससे हमारे रिश्ते मे कोई समसया तो नहीं आ जायेगी?

रवी: अरे नहीं पगली, बल्कि हमारा रिश्ता और गहरा हो जायेगा।

मधू: सच?

रवी: हाँ बिलकुल। और सोचो जब हम मिलेंगे और अपने साथ हुए अनुभवों को एक दूसरे को विस्तार से एकटिंग कर के समझायेंगे को हमारी चुदाई कितनी धमाकेदार होगी।

मधू: (हँसते हुए) जंगली कहीं के!

रवी: अरे मेरी जान, जंगलीपना तो मैं तुम्हे मिलने पर दिखाऊँगा जब तब तुम मुझे किसी स्टड को सेडूस करने वाली घटना बताओगी।

मधू: और तुम भी मेरा सेक्स की प्यासी शेरनी वाला रूप देखोगे जब तुम मुझे बताओगे कि तुमने सीमा को कैसे अपने साथ चुदाई के लिये तैयार किया।

रवी: ठीक है, आइ मिस यू। बॉय।

दो दिनों बाद, मधू बाज़ार से शॉपिंग करके लौटी थी और नींबू के साथ वोडका का तगड़ा सा पैग बना कर चुसकियाँ ले रही थी। उसका इरादा एक-दो पैग पीने के बाद अपने कपड़े उतार कर बिस्तर में जा कर कोई ब्लू-फिल्म देखते हुए अपनी चूत को मोटे से केले से चोदने का था। एक पैग खत्म करने के बाद मधू दूसरा पैग बनाने के लिये उठी ही थी कि उसे दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आयी।

मधू: अरे ये कौन आ गया? चलो देखा जायेगा... अच्छा हुआ अभी मैंने कपड़े नही उतारे थे।

मधू मार्बल के फर्श पर अपने सैंडल की हील खटखटाती बेमन से दरवाज़े की तरफ बढ़ी। उसने दरवाज़ा खोला तो एक लगभग 20 साल के नौजवान और गठीले नवयुवक को खडा पाया। उसे देखते ही मधू के शरीर मे एक लहर सी दौड़ गयी।

मधू: जी कहिये?

सेल्समैन: गुड मार्निन्ग मैडम मैं अपनी कम्पनी के समान का प्रचार कर रहा हूँ।

मधू: अच्छा, क्या बेच रहे हो?

सेल्समैन: जी हमारी कम्पनी लेडीज़ पैन्टीज़ और ब्रा बनाती है।

मधू: अच्छा, तो फिर तुम्हारी कम्पनी सेल्स गर्ल्ज़ को क्यों नहीं भेजती बेचने के लिये?

सेल्समैन: जी मैडम, आज कल की लेडीज़ तो हेन्डसम सेल्समैन की ही डिमान्ड करती हैं। अगर आप को कोई ऐतराज़ है तो मैं चला जाता हूँ और कल किसी सेल्स गर्ल को भेज दूँगा।

मधू: नहीं ऐसी कोई बात नहीं है, मुझे तुम से कोई प्राब्लम नहीं है।

सेल्समैन: वैरी गुड।

मधू: आओ इधर बैठ जाओ। पानी पियोगे या वोड...?

सेल्समैन: जी नहीं, थेन्क यू।

मधू: कितने सालों से तुम ये काम कर रहे हो?

सेल्समैन: दो तीन साल हो गये हैं लगभग।

मधू: (हँसते हुए) तो काफ़ी एक्सपीरियंस है!

सेल्समैन: जी हाँ।

मधू: तो फिर तो तुम काफ़ी लेडीज़ को खुश कर चुके हो... हा। हा। हा।

सेल्समैन: (थोड़ा शर्माते हुए) जी हाँ लेडीज़ को खुश करना ही मेरा काम है।

मधू: चलो देखते हैं। मेरी पसन्द थोडी हट के है।

मधू ने अपने लिये दूसरा पैग तैयार किया और फिर एक सिप ले कर बोली।

मधू: वैसे एक बात तुमने सच कही थी की तुम्हारी कम्पनी के सेल्समैन हेन्डसम हैं।

सेल्समैन: थेन्क यू वेरी मच।

मधू: चलो तो दिखाओ अपना सामान।

सेल्समैन: जी??? जी अच्छा मगर पहले बताइये कि आप का साईज़ क्या है। दर असल सारे गार्मेन्ट्स मेरी गाड़ी मे बक्सों मे पड़े हैं और मैं ठीक साईज़ वाला बक्सा निकाल के ले आऊँगा।

मधू: (नासमझी की एकटिंग करते हुए) किस का साईज़?

सेल्समैन: आप कौन सा ब्रा साईज़ और कौन सा पैन्टी साईज़ पहनती हैं?

मधू: पता नहीं मेरे पति ही मेरी शापिंग करते हैं। मेरे खयाल से ब्रा साईज़ 34 है। अच्छा देखतें हैं तुम कितने अच्छे सेल्समैन हो। मुझे देख कर बताओ मेरा साईज़ क्या होगा?

सेल्समैन: (मधू के बूब्स को घूरते हुए) जी मेरे खयाल से 36 होना चाहिये। आप कहें तो मैं नाप के बताऊँ?

मधू: हाँ नाप के देखो।

सेल्समैन ने इंची टेप को मधू की पीठ के दोनो तरफ़ से कन्धों के नीचे से घुमा कर उसके बूब्स के उपर दोनो सिरों को जोड दिया। उसकी अँगुलियाँ मधू के बूब्स को हल्के से छूईं और साईज़ पढने के लिये वो अपना मुँह टेप के बिल्कुल पास ले आया। मधू ने उसकी गरम साँसें अपने बूब्स पर महसूस कीं और उसी समय यह तय कर लिया की रवी के साथ बनाये प्लैन को वो आज सच कर देगी।

सेल्समैन: मेरा अंदाज़ा बिलकुल सही था। आपका साईज़ 36 ही है।

सेल्समैन: अच्छा मैडम, आपको अपना कप साईज़ तो मालुम होगा?

मधू: नहीं, मुझे नहीं मालुम।

सेल्समैन: तो फिर आप अपना कोई पुराना ब्रा दे दीजिये। मैं देख कर अंदाजा लगा लूँगा।

मधू: नहीं, मेरे पुराने ब्रा मे कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे बिलकुल फ़िट आता हो, तुम नाप के ही देख लो ना।

सेल्समैन: जी मैडम, मगर कप साईज़ इंची टेप से तो नहीं नापा जायेगा...।

मधू: हाँ मुझे मालुम है, तुम अपने हाथों से नाप ले सकते हो।

सेल्समैन: (थोडे आश्चर्य के साथ) ज..जी.. मैडम?

मधूका दूसरा पग लगभग खत्म होने आया था और उसे हल्का सा मीठा सुरूर महसूस हो रहा था। जो थोड़ी बहुत हिचकिचाहट थी वो भी दूर हो गयी थी।

मधू: सॉरी अगर मैं तुम्हें अन–कमफरटेबल कर रही हूँ तो। मेरे पति देश के बहार गयें हैं और मैं बोर हो रही थी, इसलिये तुम्हें जल्दी जाने देना नहीं चाहती।

सेल्समैन: आप चिंता मत करो। आप जब तक चाहें मैं यहीं आप के साथ रहुँगा। अच्छा कितने दिनों से बाहर हैं आप के पति?

मधू: तीन महीने हो गयें हैं और अभी दो तीन महीने और लगेंगे।

सेल्समैन: ओ माई गाड! ये तो बहुत लम्बा टाईम है!

मधू: हाँ! अब तो हद हो गयी है। आखिर मेरी भी कुछ ज़रूरतें हैं।

सेल्समैन: जी मैं समझ सकता हूँ।

मधू: तुम्हारी शादी हुई है?

सेल्समैन: अभी तक नहीं।

मधू: कोई गर्लफ्रेन्ड?

सेल्समैन: नहीं वो भी नहीं।

मधू: तो फिर तुम कुछ नहीं समझ सकते। वैसे तुम जैसे हेन्डसम लडके की कोई गर्लफ्रेन्ड कैसे नहीं है?

सेल्समैन: जी मेरे पास टाईम ही नहीं है। दिन में मैं कालेज जाता हूँ और शाम को मैं ये पार्ट टाईम जाब करता हूँ।

मधू: ओके समझी। चलो छोडो ले लो मेरा नाप।

सेल्समैन: जी अच्छा।

सेल्समैन मधू के करीब आया और उसके बूब्स की गोलाइयों के साईज़ का हाथों से अंदाज़ा लगाने की कोशिश करने लगा।

मधू: (हल्की से मुस्कुराहट देते हुए) अगर तुम इतनी दूर से साईज़ नापोगे तो कैसे पता चलेगा?

सेल्समैन: (अब कम भय के साथ) आप ठीक कह रहीं हैं मैडम।

सेल्समैन ने अब अपने हाथ मधू के टॉप के उपर से उसके बूब्स पर रख दिये और थोड़ा सा दबाया।

सेल्समैन: जी मेरे हिसाब से आपका कप साईज़ 'ई' होना चाहिये। आपके टॉप और ब्रा की वजह से थोड़ा ज़्यादा आ रहा है।

मधू: नहीं नहीं... मुझे बिलकुल ठीक साईज़ ही चाहिये। मैं टॉप और ब्रा उतार देती हूँ और तुम नाप लो।

सेल्समैन: आप जैसा कहें मैडम।

मधू: जब मैं इतना सब कर रही हूँ तो तुम मुझे मधू बुला सकते हो।

सेल्समैन: ओके मधू, तुम भी मुझे विकास बुला सकती हो।

मधू ने अपना टॉप खींच कर उतार दिया और पीछे लगे ब्रा के हुक्स खोलने का प्रयास करने लगी।

मधू: अरे विकास, हुक्स खोलने मे मेरी मदद करो ना।

मधू पीछे घूम गयी और विकास ने उसके ब्रा की पट्टी को दोनो हाथों से पकड़ कर हुक्स खोल दिये। मधू अब टॉपलेस हो कर विकास की तरफ़ घूम गयी। विकास ने उसके बूब्स को कुछ देर निहारा और फिर अपने हाथों को उसके बूब्स पर रख कर नापने लगा। उसने मधू के बूब्स को थोड़ा दबा दिया। मधू ने अपनी आँखें बन्द करके हलकी सी आह भरी।

विकास: मधू तुम्हारा कप साईज़ तो 'ई' है। वाह '36ई' तो हर लडकी का सपना होता है। तुम बहुत लकी हो।

मधू: (आँख मारते हुए) हाँ विकास, थेन्क यू। मगर इस समय तो मुझे तुम लकी लग रहे हो

विकास: यह तो सच है। अच्छा पैन्टी का साईज़ भी नाप लें?

मधू: हम, मगर यहाँ नहीं। बेडरूम मे चलते हैं। पर उसके पहले वोडका-निंबू का एक-एक जाम हो जाये।

विकास: ठीक है।

मधू ने दो पैग तैयार किये। दोनों ने अपने-अपने पैग खत्म किये और मधू विकास का हाथ पकड़ कर उसे बेडरूम मे ले गयी और बेड के किनारे पर बैठ गयी। मधू तो तीन mÉaÉ के बाद पूरी मस्ती में थी।

मधू: हाँ अब तुम मेरी पैन्टी क साईज़ नाप सकते हो।

विकास ने मधू की स्कर्ट उठाया और उसकी पैन्टी के उपर से उसकी कमर पर हाथ फेरा।

विकास: मधू ये स्कर्ट बीच मे अड़ रही है। इसे उतारना पड़ेगा।

मधू: तो सोच क्या रहे हो?

विकास ने मधू की स्कर्ट की साईड पर लगी ज़िप को खोल दिया और खींचने लगा। मधू ने भी अपनी गाँड उठा कर स्कर्ट उतारने मे उसकी सहायता की। मधू ने एक

छोटी सी पैन्टी पहनी हुई थी जिसमे से उसकी चूत की शेप उभर के दिखायी पढ़ रही थी। विकास से रहा नहीं गया और वो पैन्टी के उपर से मधू की चूत को सहलाने लगा। मधू के बदन में उत्तेजना की एक लहर सी दौड गयी और उसने अपने घुटनों को जोड़ते हुए विकास का हाथ को अपनी जाँघों के बीच मे जकड लिया।

मधू: क्यों कैसी लगी मेरी पैन्टी?

विकास: अच्छी है, मगर मुझे उतार के देखनी पड़ेगी।

मधू: अरे वाह, मैं तुम्हारे सामने सिर्फ़ पैन्टी और सैंडल पहने बैठी हूँ और तुमने पूरे कपड़े पहेन रखे हैं। ये तो ठीक नहीं है।

विकास: तो उतार लो ना जो तुम्हें उतारना है। मना किसने किया है।

मधू ने विकास की शर्ट के बटन खोले और अपने हाथ उसकी कसी हुई चेस्ट पर फेरने लगी।

मधू: वाह! तुम्हारी बोडी तो बड़ी मैस्क्यूलीन है।

विकास: हाँ मैं हर रोज़ ऐक्सरसाईज़ करता हूँ।

मधू ने फिर विकास की बेल्ट उतारी ैर उसकी पेन्ट आगे से खोल कर नीचे खींच दी। विकास का तना हुआ लन्ड उसके अन्डरवियर में से तोप की तरह उभर रहा था। मधू ने अन्डरवीयर के उपर से विकास के लन्ड को अपनी मुठी मे जकड़ लिया।

मधू: अरे बाप रे! तुम्हारा लन्ड तो बहुत ही मोटा और तगड़ा है। इसकी भी रोज़ ऐक्सरसाईज़ करते हो क्या?

विकास: हाँ इसकी भी रोज़ मालिश होती है मेरी मुट्ठी में।

मधू: चलो अब हम बराबर की स्तिथी मे हैं – अपने अपने अन्डरवीयर में। आओ मुझे गले लगाओ ना

यह कह कर मधू खड़ी हो कर और विकास से चिपट गयी। विकास ने कस कर मधू को अपनी बाँहों में जकड़ लिया। मधू के बूब्स उसकी छती पर बुरी तरह से दबने लगे। विकास का खड़ा लन्ड अंडरवीयर के नीचे से मधू की जाँघों के बीच मे उसकी पैन्टी

पर रगड़ने लगा। फिर विकास ने मधू के गले की साईड पर एक किस किया तो मधू ने एक लम्बी आह भरी। अब तक दोनो ही बहुत गरम हो चुके थे। विकास मधू की पैन्टी के उपर से उसकी गाँड पर हाथ फेरने लगा तो मधू ने विकास के होंठों को चूसना शुरू कर दिया। फिर विकास ने मधू की पैन्टी के अन्दर हाथ डाल कर उसकी चूत पर अँगुली फिरायी। मधू की चूत अब तक काफ़ी भीग चुकी थी।

मधू: आआआआआआआहहहहहहह विकास मेरी पैन्टी उतार दो ना। मेरे साथ जो करना है कर लो। आज मैं सिर्फ़ तुम्हारी हूँ।

विकास: तो फिर मेरा अन्डरवीयर उतारो और मेरे लन्ड को किस करो।

मधू झुक कर अपने घुटनो पर बैठ गई और विकास का अन्डरवीयर खींचने लगी मगर विकास के खडे लन्ड में वो अड़ गया। मधू ने अपना हाथ अन्डरवीयर के अन्दर डाला और लन्ड तो अज़ाद कर दिया। लन्ड इतना तन कर खड़ा था की मधू की मुठी मे पूरा भी नहीं आ रहा था।

मधू: कितना बडा और मोटा है!

विकास: तो किस करो ना इसे।

मधू ने लन्ड की टोपी को चूसा और फ़िर पूरा सुपाड़ा मुँह के अन्दर ले लिया। विकास ने उसका सिर पकड़ा और लन्ड को उसके मुँह मे धकेल दिया। मधू उसे चूसने लगी। विकास लन्ड को मधू के मुँह के अन्दर बाहर करने लगा। बीच बीच मे मधू उसे निकाल कर लन्ड की पूरी लम्बाई चाटती। थोडी देर बाद विकास को अपना लन्ड बाहर निकालना पडा जिस से वो जल्दी न झड़ जाये।

मधू: क्यों मज़ा आया?

विकास: हाँ बहुत, तुम बहुत अच्छा चूसती हो... अब मुझे अपनी चूत दिखाओ ना?

मधू से अब रहा नहीं जा रहा था। वो वोडका और वासने के नशे में झूम रही थी। उसने जल्दी से अपनी पैन्टी उतार दी और हाई हील के सैंडल छोड़ कर पूरी नंगी खड़ी हो गई – विकास के तने लन्ड के सामने। मधू की चूत का रस उसकी टाँगों से बह रहा था। विकास ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उस पर चढ़ कर उसके बूब्स बुरी तरह चूसने लगा।

मधू: उउउउईईईई उउफ़फफ़आ..हहह..आआहहहहहह प्लीज... थोड़ा धीरे चूसो ना।

विकास ने अब अपनी जीभ उसकी नाभी से डाली। मधू उसके मुँह को अपनी चूत की तरफ़ धकेलने लगी। विकास उसका इशारा समझ गया और अपना मुँह उसकी चूत की ओर ले गया। फ़िर वो उसकी चूत को चाटने लगा और उसकी क्लिट पर अपनी जीभ की नोक फिराने लगा। फ़िर जीभ की नोक को उसकी चूत के होंठों के बीच डाल कर उन्हें खोलने लगा ।

मधू अब बहुत ज़्यादा तडप रही थी और उसका बदन उत्तेजना में जोर ज़ोर से काँप रहा था। वो बहुत आवाज़ें भी निकल रही थी।

मधू: मममममम... ऊऊईईईई... आआआ मैं मर... जाऊँगी... प्लीज! ये बदन तुम्हारा है... आआआहहहहह!!!!!!!!!! चढ़ जाओ मेरे जिस्म पर और मेरी चूत को चीर डालो अपने लन्ड से।

विकास उठा और मधू के नंगे बदन पर चढ गया और उसके बूब्स को मसलते हुए उसकी जाँघें फैलायी और लन्ड को चूत के मुख पर रख कर थोड़ा ज़ोर लगया। एक जोर के झटके ने लन्ड के सुपाड़े का आधा भाग अन्दर कर दिया। इतना लम्बा और मोटा लन्ड होने की वजह से मधू के मुँह से दर्दभरी सिसकी निकली पर अब उसे किसी चीज़ की परवाह नहीं थी और उसने अपनी टाँगें और फ़ैला दीं। विकास ने अपना लन्ड आहिस्ता आहिस्ता मधू की चूत मे पूरा घुसा दिया।

मधू: ऊऊऊऊऊईईईईईई... मममममम....अम्मा... इस लन्ड ने तो मुझे मार डाला !

अब विकास मधू के ऊपर लेट गया और उसके होंठों को अपने होंठों से चूसने लगा। वो अपने हाथों से उसकी चूचियों के साथ खेलने लगा। अपने लन्ड को थोडी तेज़ी से मधू की चूत मे अन्दर बाहर करने लगा। मधू ने अपनी जाँघें विकास की कमर पर बाँध लीं और अपने चूतड़ उठा–उठा कर चुदवाने लगी। कुछ समय चुदाई के बाद मधू ने एक लम्बी चींख मारी और उसका बदन झटके मारने लगा। विकास समझ गया की मधू को ओरगैस्म आ गया है।

विकास ने अब अपनी चुदाई की रफ़्तार बढ़ाई और लम्बे लम्बे स्ट्रोक्स लेने लगा। साथ ही अपने होंठों से वो मधू के बूब्स को ज़ोर से चूसने लगा। मधू की चूत इतनी गीली

हो चुकी थी की जब भी विकास का लन्ड अन्दर जाता तो एक 'फाच्च्ह–फाच्च्ह' की अवाज़ आती।

मधू: ऊउउहहहहऊऊऊऊऊऊहहहहहह... आआऊऊ... आआऊओ... चोदो मुझे और जोर से ॥ आआहह फ़क मी हार्ड.... उउउउहहहहह... आआआआआआआँआँआँआँ।

मधू को एक बार और झटके खाते हुए ओरगैस्म आ गया। उसने विकास को उसे डोगी स्टायल में चोदने के लिये कहा। वो बिस्तर पर घुटनों के बल, अपनी गाँड उठा कर झुक गयी। विकास ने भी घुटनो के बल बैठ कर पीछे से उसके बूब्स को जकड लिया और अपन लम्बा लन्ड उसकी चूत मे दे दिया। अब लन्ड मधू की चूत की काफ़ी गहरायी तक अन्दर जाने लगा। इस तरह लगभग 10 मिनट और चुदाई चलती रही। फ़िर विकास से रहा नहीं गया और उसका पूरा बदन बुरी तरह अकड़ गया। उसके लन्ड का साईज़ और फूलने लगा और वो हार्ड भी ज़्यादा होने लगा। एक लम्बी से आह भर के उसने एक आखरी स्ट्रोक लिया और उसके लन्ड ने विस्फोट के साथ अपना सारा स्पर्म मधू की चूत मे छोड़ दिया। मधू भी उसके टाईट लन्ड की आखरी स्ट्रोक के साथ तीसरी बार झड़ गयी। दोनों संतष्ट हो कर थोड़ी देर बिस्तर पर चिपक के लेट गये।

विकास: क्यों मधू मज़ा आया?

मधू: उफ़फ़फ़फ़फ़,.. बहुत मज़ा आया। आज के बाद तुम रोज चोदने आ जाया करो। जब तक मेरे पति नहीं आ जाते... आओगे ना...?

विकास: हाँ क्यों नहीं। तुम जब कहोगी मैं हाज़िर हो जाऊँगा। मगर तुम्हारे पति को पता चल गया तो?

मधू: उसकी चिंता तुम मत करो। उन्हें पता है की मैं किसी के साथ चुदाई करने वाली हूँ।

विकास: सच में? और उन्हें इस मे कोई ऐतराज़ नहीं है?

मधू: नहीं। हम ने सोच कर ही ये फ़ैसला किया था की जब तक हम एक दूसरे से दूर हैं तो ऐसे ही अपनी अपनी प्यास बुझायेंगे।

विकास: तुम और तुम्हारे पति तो बहुत ही खुले विचारों के हैं।

मधू: हाँ... और शायद उनके आने के बाद मैं उन्हें थ्रीसम के लीये भी राज़ी कर लूँ तुम्हारे साथ। तुम्हे ये अच्छा लगेगा? मेरी कब से तमन्ना है कि मैं अपने गाँड और चूत में एक साथ दो लंड लूँ।

विकास: बहुत अच्छा। मेरी तो किसमत ही खुल गयी है।

अगले दिन दोबारा मिलने का प्लान बना कर विकास ने मधू के होंठों को चूमा और चला गया। जाने से पहले उसने मधू को एक सुन्दर नीले रंग का ब्रा और पैन्टी का सेट उपहार मे दिया जो की बिल्कुल जालीदार था और बहुत छोटा भी। मधू ने उसे अगले दिन उसी सेट में मिलने की प्रोमिस किया।

उसके जाते ही मधू ने रवी को फोन किया और सारी बात बतायी। रवी ने भी उसे बताया की वो अपने दोस्त की बीवी के साथ चुदाई कर चुका है। दोनों ने वादा किया की मिलने पर वो अपनी सेक्स लाईफ़ को ऐसे ही रोमाँचक बनाये रखेंगे।

।।।।।। समाप्त ।।।।।।

Hindi Fonts By: SINSEX